



Mr.nikita

03 May 1998

06:00 PM

Buldana

Model: Web-MyKundli

Order No: 120023001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 03/05/1998
दिवस _____: रविवार
जन्म समय _____: 18:00:00 कला
इष्ट _____: 30:14:09 घटी
स्थान _____: Buldana
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 20:31:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:24:48 कला
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 कला
स्थानिक वेल _____: 17:35:12 कला
वेलान्तर _____: 00:03:06 कला
साम्पातिक वेल _____: 08:20:02 कला
सूर्योदय _____: 05:54:20 कला
सूर्यास्त _____: 18:49:26 कला
दिनमान _____: 12:55:06 कला
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्याचे अंश _____: 19:02:47 मेष
लग्नाचे अंश _____: 08:40:16 तुला

अवकहडा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: गण्ड
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मांजर
नाडी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डू-दुर्जय
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृषभ

पंचांग

आजोबांचें नांव _____ :
बडीलांचे नांव _____ :
आईचें नांव _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	वैशाख	13
पंजाबी	संवत : 2055	वैशाख	21
बंगाली	सन् : 1405	वैशाख	19
तमिल	संवत : 2055	चिटिराई	20
केरल	कोल्लम : 1173	मेदम	20
नेपाली	संवत : 2055	वैशाख	20
चैत्रादी	संवत : 2055	वैशाख	शुक्ल 8
कार्तिकादी	संवत : 2055	वैशाख	शुक्ल 8

पंचांग

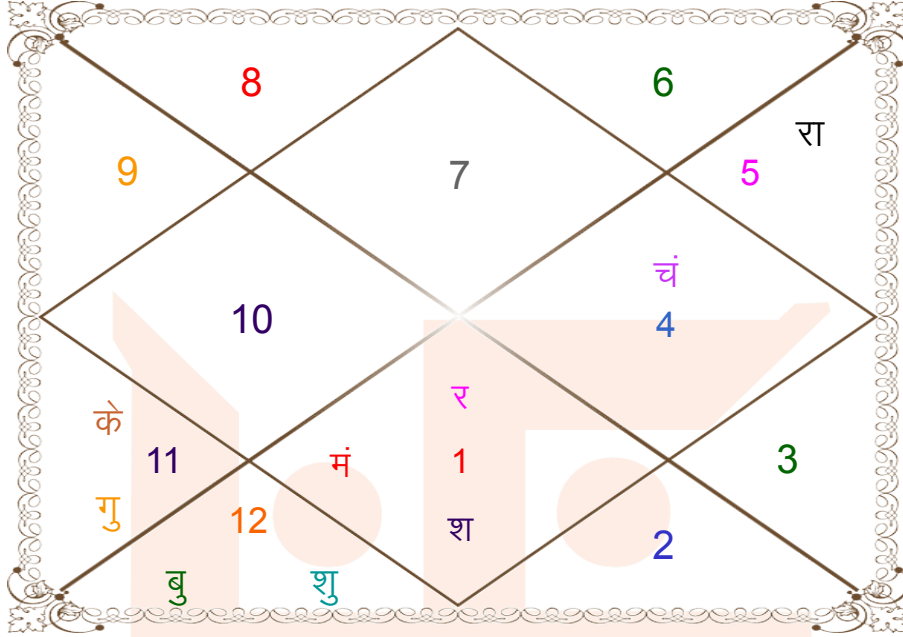
सूर्योदय समयी तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति वेळ _____ : 28:10:45
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति वेळ _____ : 11:10:52 कला
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय समयी योग _____ : गण्ड
योग समाप्ति वेळ _____ : 25:19:20 कला
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय समयी करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति वेळ _____ : 15:33:41 कला
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 17:02:51
भभोग _____ : 64:44:49
भोग्य दशा वेळ _____ : बुध 12 वर्ष 5 मा 22 दि

घात चक्र

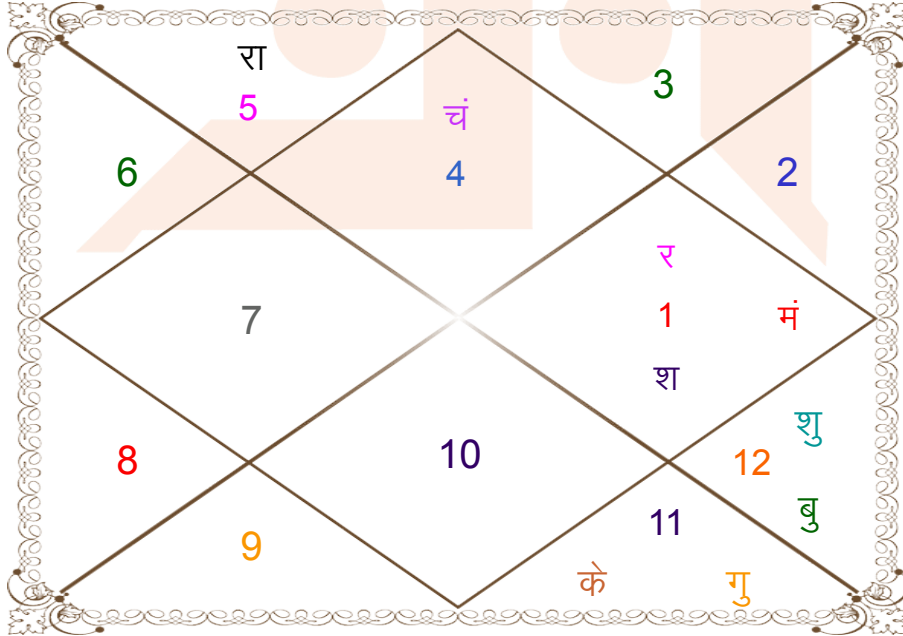
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिवस _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
रवि _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगळ _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु बु	श र मं		
के गु			चं
			रा
		ल	

लग्न कुंडली

	श र मं	शु बु	के गु
चं			
रा			
	ल		

विंशोत्तरी बुध 12वर्ष 5मा 22दि

बुध

03/05/1998

26/10/2113

बुध	25/10/2010
केतु	25/10/2017
शुक्र	25/10/2037
रवि	25/10/2043
चन्द्र	25/10/2053
मंगल	25/10/2060
राहु	25/10/2078
गुरु	25/10/2094
शनि	26/10/2113

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 11मा 7दि

संकटा

10/04/2019

10/04/2027

संकटा	19/01/2021
मंगला	10/04/2021
पिंगला	19/09/2021
धान्या	21/05/2022
भ्रामरी	10/04/2023
भद्रिका	20/05/2024
उल्का	19/09/2025
सिद्धा	10/04/2027

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 23:42:28	तुला 08:40:16
2	तुला 23:42:28	वृश्चिक 08:44:40
3	वृश्चिक 23:46:52	धनु 08:49:04
4	धनु 23:51:16	मकर 08:53:28
5	मकर 23:51:16	कुम्भ 08:49:04
6	कुम्भ 23:46:52	मीन 08:44:40
7	मीन 23:42:28	मेष 08:40:16
8	मेष 23:42:28	वृषभ 08:44:40
9	वृषभ 23:46:52	मिथुन 08:49:04
10	मिथुन 23:51:16	कर्क 08:53:28
11	कर्क 23:51:16	सिंह 08:49:04
12	सिंह 23:46:52	कन्या 08:44:40

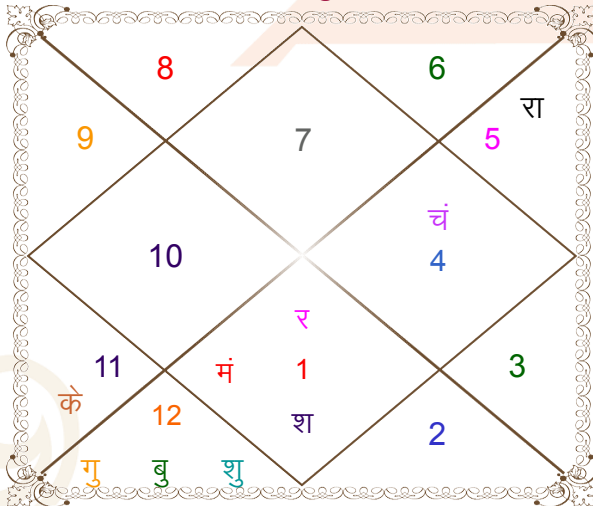
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	08:40:16
2	वृश्चिक	07:54:51
3	धनु	07:54:22
4	मकर	08:53:28
5	कुम्भ	10:33:03
6	मीन	11:05:25
7	मेष	08:40:16
8	वृषभ	07:54:51
9	मिथुन	07:54:22
10	कर्क	08:53:28
11	सिंह	10:33:03
12	कन्या	11:05:25

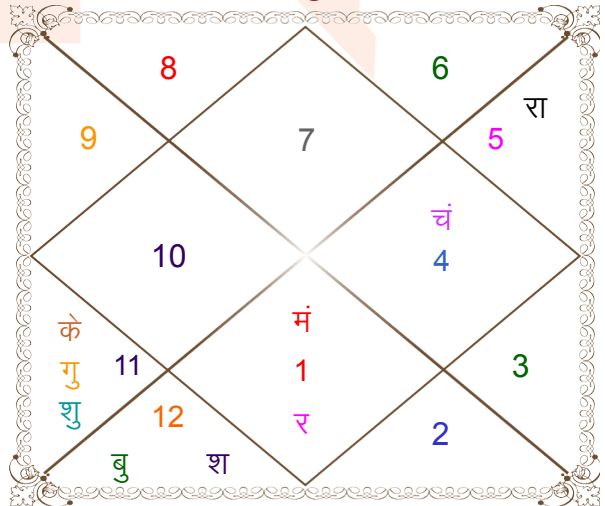
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 12 वर्ष 5 महिना 22 दिवस

बुध 17 वर्ष 03/05/1998 25/10/2010	केतु 7 वर्ष 25/10/2010 25/10/2017	शुक्र 20 वर्ष 25/10/2017 25/10/2037	सूर्य 6 वर्ष 25/10/2037 25/10/2043	चंद्र 10 वर्ष 25/10/2043 25/10/2053
00/00/0000	केतु 23/03/2011	शुक्र 23/02/2021	सूर्य 11/02/2038	चंद्र 25/08/2044
03/05/1998	शुक्र 22/05/2012	सूर्य 24/02/2022	चंद्र 13/08/2038	मंगळ 26/03/2045
शुक्र 19/01/2000	सूर्य 27/09/2012	चंद्र 25/10/2023	मंगळ 19/12/2038	राहु 25/09/2046
सूर्य 24/11/2000	चंद्र 28/04/2013	मंगळ 24/12/2024	राहु 13/11/2039	गुरु 25/01/2048
चंद्र 25/04/2002	मंगळ 24/09/2013	राहु 25/12/2027	गुरु 31/08/2040	शनि 25/08/2049
मंगळ 23/04/2003	राहु 13/10/2014	गुरु 25/08/2030	शनि 13/08/2041	बुध 24/01/2051
राहु 09/11/2005	गुरु 19/09/2015	शनि 25/10/2033	बुध 19/06/2042	केतु 25/08/2051
गुरु 15/02/2008	शनि 28/10/2016	बुध 25/08/2036	केतु 25/10/2042	शुक्र 25/04/2053
शनि 25/10/2010	बुध 25/10/2017	केतु 25/10/2037	शुक्र 25/10/2043	सूर्य 25/10/2053

मंगळ 7 वर्ष 25/10/2053 25/10/2060	राहु 18 वर्ष 25/10/2060 25/10/2078	गुरु 16 वर्ष 25/10/2078 25/10/2094	शनि 19 वर्ष 25/10/2094 26/10/2113	बुध 17 वर्ष 26/10/2113 00/00/0000
मंगळ 23/03/2054	राहु 08/07/2063	गुरु 12/12/2080	शनि 28/10/2097	बुध 24/03/2116
राहु 11/04/2055	गुरु 30/11/2065	शनि 26/06/2083	बुध 08/07/2100	केतु 21/03/2117
गुरु 16/03/2056	शनि 06/10/2068	बुध 01/10/2085	केतु 17/08/2101	शुक्र 04/05/2118
शनि 25/04/2057	बुध 26/04/2071	केतु 06/09/2086	शुक्र 16/10/2104	00/00/0000
बुध 22/04/2058	केतु 13/05/2072	शुक्र 07/05/2089	सूर्य 28/09/2105	00/00/0000
केतु 19/09/2058	शुक्र 14/05/2075	सूर्य 24/02/2090	चंद्र 30/04/2107	00/00/0000
शुक्र 19/11/2059	सूर्य 07/04/2076	चंद्र 26/06/2091	मंगळ 08/06/2108	00/00/0000
सूर्य 26/03/2060	चंद्र 07/10/2077	मंगळ 01/06/2092	राहु 15/04/2111	00/00/0000
चंद्र 25/10/2060	मंगळ 25/10/2078	राहु 25/10/2094	गुरु 26/10/2113	00/00/0000

- ❖ वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 12 वर्ष 6 मा 9 दि होता आहेत.
- ❖ वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु 24/12/2024 25/12/2027	शुक्र - गुरु 25/12/2027 25/08/2030	शुक्र - शनि 25/08/2030 25/10/2033	शुक्र - बुध 25/10/2033 25/08/2036	शुक्र - केतु 25/08/2036 25/10/2037
राहु 07/06/2025 गुरु 31/10/2025 शनि 22/04/2026 बुध 25/09/2026 केतु 28/11/2026 शुक्र 29/05/2027 सूर्य 23/07/2027 चंद्र 22/10/2027 मंगळ 25/12/2027	गुरु 03/05/2028 शनि 04/10/2028 बुध 19/02/2029 केतु 17/04/2029 शुक्र 26/09/2029 सूर्य 14/11/2029 चंद्र 03/02/2030 मंगळ 01/04/2030 राहु 25/08/2030	शनि 24/02/2031 बुध 07/08/2031 केतु 14/10/2031 शुक्र 23/04/2032 सूर्य 20/06/2032 चंद्र 25/09/2032 मंगळ 01/12/2032 राहु 24/05/2033 गुरु 25/10/2033	बुध 20/03/2034 केतु 20/05/2034 शुक्र 08/11/2034 सूर्य 30/12/2034 चंद्र 26/03/2035 मंगळ 26/05/2035 राहु 28/10/2035 गुरु 14/03/2036 शनि 25/08/2036	केतु 19/09/2036 शुक्र 29/11/2036 सूर्य 20/12/2036 चंद्र 24/01/2037 मंगळ 18/02/2037 राहु 23/04/2037 गुरु 19/06/2037 शनि 25/08/2037 बुध 25/10/2037
सूर्य - सूर्य 25/10/2037 11/02/2038	सूर्य - चंद्र 11/02/2038 13/08/2038	सूर्य - मंगळ 13/08/2038 19/12/2038	सूर्य - राहु 19/12/2038 13/11/2039	सूर्य - गुरु 13/11/2039 31/08/2040
सूर्य 30/10/2037 चंद्र 08/11/2037 मंगळ 15/11/2037 राहु 01/12/2037 गुरु 16/12/2037 शनि 02/01/2038 बुध 18/01/2038 केतु 24/01/2038 शुक्र 11/02/2038	चंद्र 27/02/2038 मंगळ 09/03/2038 राहु 06/04/2038 गुरु 30/04/2038 शनि 29/05/2038 बुध 24/06/2038 केतु 04/07/2038 शुक्र 04/08/2038 सूर्य 13/08/2038	मंगळ 21/08/2038 राहु 09/09/2038 गुरु 26/09/2038 शनि 16/10/2038 बुध 03/11/2038 केतु 11/11/2038 शुक्र 02/12/2038 सूर्य 08/12/2038 चंद्र 19/12/2038	राहु 06/02/2039 गुरु 22/03/2039 शनि 13/05/2039 बुध 29/06/2039 केतु 18/07/2039 शुक्र 11/09/2039 सूर्य 27/09/2039 चंद्र 24/10/2039 मंगळ 13/11/2039	गुरु 22/12/2039 शनि 06/02/2040 बुध 18/03/2040 केतु 04/04/2040 शुक्र 23/05/2040 सूर्य 07/06/2040 चंद्र 01/07/2040 मंगळ 18/07/2040 राहु 31/08/2040
सूर्य - शनि 31/08/2040 13/08/2041	सूर्य - बुध 13/08/2041 19/06/2042	सूर्य - केतु 19/06/2042 25/10/2042	सूर्य - शुक्र 25/10/2042 25/10/2043	चंद्र - चंद्र 25/10/2043 25/08/2044
शनि 25/10/2040 बुध 13/12/2040 केतु 02/01/2041 शुक्र 01/03/2041 सूर्य 18/03/2041 चंद्र 16/04/2041 मंगळ 06/05/2041 राहु 28/06/2041 गुरु 13/08/2041	बुध 26/09/2041 केतु 14/10/2041 शुक्र 05/12/2041 सूर्य 20/12/2041 चंद्र 15/01/2042 मंगळ 02/02/2042 राहु 21/03/2042 गुरु 01/05/2042 शनि 19/06/2042	केतु 27/06/2042 शुक्र 18/07/2042 सूर्य 24/07/2042 चंद्र 04/08/2042 मंगळ 12/08/2042 राहु 31/08/2042 गुरु 17/09/2042 शनि 07/10/2042 बुध 25/10/2042	शुक्र 25/12/2042 सूर्य 12/01/2043 चंद्र 12/02/2043 मंगळ 05/03/2043 राहु 29/04/2043 गुरु 16/06/2043 शनि 13/08/2043 बुध 04/10/2043 केतु 25/10/2043	चंद्र 20/11/2043 मंगळ 07/12/2043 राहु 22/01/2044 गुरु 03/03/2044 शनि 20/04/2044 बुध 02/06/2044 केतु 20/06/2044 शुक्र 10/08/2044 सूर्य 25/08/2044

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्याचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव-देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार-उद्योग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षित लाभ होतो. शुभ-अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

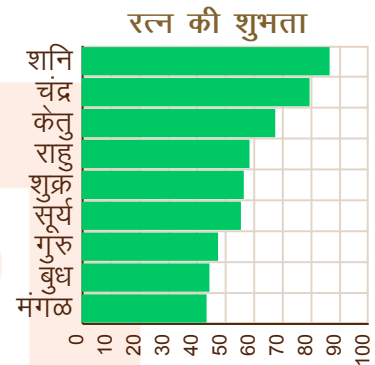
मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	86%	दम्पति, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	79%	व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	67%	सन्तति सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	58%	धनार्जन, दम्पति
हीरा	शुक्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना पासून सुरक्षा, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	55%	दम्पति, धनार्जन
पुष्कराज	गुरु	47%	सन्तति कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	44%	शत्रु व रोग, नेष्ट भाग्य, व्यय
पोवले	मंगळ	43%	दाम्पत्य कष्ट, धन हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	25/10/2010	61%	67%	43%	59%	47%	62%	86%	58%	67%
केतु	25/10/2017	34%	67%	53%	44%	47%	62%	73%	41%	80%
शुक्र	25/10/2037	34%	67%	43%	53%	47%	69%	92%	64%	73%
सूर्य	25/10/2043	67%	86%	53%	44%	55%	38%	73%	41%	55%
चंद्र	25/10/2053	61%	92%	43%	53%	47%	56%	86%	41%	55%
मंगळ	25/10/2060	61%	86%	59%	19%	55%	56%	86%	41%	73%
राहु	25/10/2078	34%	67%	18%	44%	47%	62%	92%	70%	55%
गुरु	25/10/2094	61%	86%	53%	19%	61%	38%	86%	58%	67%
शनि	26/10/2113	34%	67%	18%	53%	47%	62%	98%	64%	55%

साडेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चंद्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्ष मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेळप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते- पहिल्यांदा बालपणि, दूसऱ्यांदा तरुणपणि व तीसऱ्यांदा म्हातारपणि. पहिल्या साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई-वडिलावर पडतो. दुसऱ्या साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पडतो. तिसऱ्या साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरून साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साडेसातीचा दूसरा चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साडेसातीचा तीसरा चरण	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थस्थान चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टमस्थान चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साडेसातीचा दूसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साडेसातीचा तीसरा चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टमस्थान चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साडेसातीचा दूसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साडेसातीचा तीसरा चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थस्थान चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टमस्थान चरण	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार

साडेसातीचा पहला चरण
साडेसातीचा दूसरा चरण
साडेसातीचा तीसरा चरण
चतुर्थस्थान चरण
अष्टमस्थान चरण

फल

शुभ
सम
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

भाग्योदय
व्यावसायिक परेशानी
अल्प बचत
स्वास्थ्य
सन्तति सुख

साडेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उडद, काले-तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उडद चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किंवा योग्य गुरुजीकडून खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करून ध्यावा.

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पुरोहिताकडून करवून ध्यावा.

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

किंवा खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावा.

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

साडेसाती च अशुभत्व कमी करुन शुभत्व वाढवण्या साठी 5-1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मधल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उत्तरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलाने अंगठीस अभिषेक करावा. धूप-दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख-शान्ति-समृद्धि ची वाढ होईल.

मांगलिक विचार

जेहवा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेहवा असे जातक मंगळ दोषी होतात.॥ यथोक्तम्॥ लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर आणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी आणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

तुमचे जन्म समया वर मंगल स्थिति सप्तम भावात आहे, अतः आपण एक मांगलिक पुरुष आहे तसेच तुमचा मंगल दोष भंग नाय होतात, या मुळे यांचा प्रभाव पासून तुमची बायको चा स्वास्थ्य सामान्य रहणार. तसेच स्वभावात उष्णता रहणारी कधीं—मधीं सम्बधातील मतभेद उत्पन्न होउ सकतात, पण स्थिति काही थोडे वेळ रहणारी तसेच दांपत्य जीवनावर यांचा काही विशेष प्रभाव नाय होणार. आपण कधीं—मधीं उष्णता किंवा पित्त पासून अजारी होउ सकतो, मंगल प्रभाव पासून तुमचा विवाह कार्य काही उसीर होणार तसेच विवाह चे गोष्ट मध्ये काही अडचणे पण येणारी नंतर सफळता अवश्य मिळेल दांपत्य जीवन सामान्य सुखी होणार. सप्तम भावात मंगल प्रभावातून तुमचा स्वास्थ्य मध्यम रहणार, दशम भाव वर मंगल ची दृष्टि पासून कार्य क्षेत्र मध्ये तुम्हाला परिश्रम आणि पराक्रम पासून सफळता भेंटणारी तसेच समाजातील सामान्य मान—सम्मान प्राप्त करणारे, लग्न वर दृष्टि पासून स्वभावात काही तेजसविता होइल कधीं—मधीं मानसिक अशांति पण होउ सकतो. द्वितीय भाव वर मंगल दृष्टि पासून कार्य क्षेत्र मध्ये आणि परिवारिक सुख शांति किंवा समृद्धि सामान्य रहणारी, काही मतभेद पण कुटुम्बातील होउ सकतात, ज्या मुळे शांति प्रभावित होणारी. अतः आपले दांपत्य जीवनाला जास्ती सुखी ठेवाय साठी आणि संपन्न कराय साठी तुम्हाला इतर मांगळिक शिवाय कन्या पासून विवाह कराय ला पाहिजे परस्पर मंगल दोष भंग साठी कन्या ची कुंडली मध्ये मांगलिक भाव किंवा प्रथम् चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् आणि द्वादश भावात शनि तसेच राहु सारख्या पापी ग्रह होणार पाहिजे. असाक न तुमचे सुख सौभाग्य आणि ऐश्वर्य मध्ये वृद्धि होणार तसेच सुख शांति युद्ध तुमचा दांपत्य जीवन व्यतीत होणार आणि परस्पर सम्बधातील मधुरता आणि सहयोग ची भावना रहणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक काल सर्प योग है एवं राहु से केतु तक सभी भाव ग्रहों से पूर्ण है। फलस्वरूप जातक को पढ़ाई, लिखाई में या ज्ञानार्जन में व्यवधान उपस्थित होता है। खासकर उच्च शिक्षा में अधिक व्यवधान आती है। स्मरण शक्ति का हास होता है। दादा-दादी नाना-नानी से पूर्ण लाभ की आशा होते हुए भी हानि होती है। परिवार में विग्रह रहता है। परिवार के अन्य सदस्य जैसे चाचा, चचेरे भाई आदि से लड़ाई-झगड़ा रहता है। विशेष रूप से बड़े भाई के साथ विवाद होता है। भाईयों से भरपूर विवाद के कारण जातक को कोर्ट कहचरी का सामना करना पड़ता है। जिसमें नुकसान उठाना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी आजीविका के लिए घर परिवार को छोड़कर बहुत दूर में जाकर निवास करना पड़ता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहता है। कुछ समय बीत जाने पर जातक के जीवन में स्थायित्व आ जाता है और जातक रोग व्याधि से ग्रसित रहता है। मानसिक परेशानियां बनी रहती हैं। जातक की सन्तान भी अस्वस्थ रहती हैं। परिणामस्वरूप जातक का सम्पूर्ण जीवन अशान्त एवं संघर्षपूर्ण रहता है। लाभ में भयंकर बाधा बनी रहती है। व्यक्ति चिन्तातुर रहता है तथा धन के मामले को लेकर बदनामी या संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हाथ नहीं लगता। जातक के जीवन में सुख का सर्वथा अभाव रहता है और जीवन का अन्त रहस्यपूर्ण ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. रसोई घर में बैठकर भोजन करें।
3. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम 7 वर्ष तक अवश्य करें।
4. पलाश के फूल गोमूत्र में कूटकर छांव में सुखावें। उसका चूर्ण बनाकर नित्य स्नान की बाल्टी में यह चूर्ण डालें। इस प्रकार 72 बुधवार (डेढ़ वर्ष) तक स्नान करें।
5. नवनाग स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करें।
6. हर पुष्य नक्षत्र को महादेव पर रुद्री से अभिषेक करें तथा जल दुग्ध समर्पित करें।
7. शुभ मुहूर्त में चाँदी का नाग बनाकर अंगुली में धारण करें।
8. इलाहाबाद (प्रयाग) में संगम पर नाग-नागिन का विधिवत पूजन कर दुग्ध के साथ, संगम में प्रवाहित करे एवं तीर्थराज प्रयाग संगम स्थल में तर्पण श्राद्ध भी एक बार करें।
9. सर्प के वैदिक मन्त्र का जप करना या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। विधिवत नाग की पूजोपरान्त मन्त्र का जप करें। मन्त्र है-

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।

ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

इस मन्त्र का 31,000 (इकत्तीस हजार) जप करें। परन्तु कलियुग में सवालाख जप का विधान है। जप के उपरान्त होम आदि के तदनन्तर सर्प को जल में प्रवाहित करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।

11. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

12. गोमेद, सीसा, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कंबल आदि समय-समय पर दान करें।

13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

14. श्रीमद् भागवत के दशमस्कन्ध के षोडश अध्याय (16) में आये श्लोकों का 108 बार पाठ करें।

15. मंगलवार एवं शनिवार के रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

16. शुभ मुहूर्त में सर्वतो भद्रमण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।

स्त्री जातक के लिए विशेष - अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य 108 प्रदक्षिणा (फेरे) करें। तीन सौ दिन में जब 28,000 प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही सन्तति की प्राप्ति होगी।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है ।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में रवि, बुध और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष

सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान् रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान्, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- शुक्र
(25/10/2017 - 25/10/2037)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 25/10/2017 को आरम्भ होकर 25/10/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित कर रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(24/12/2024 - 25/12/2027)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 25/10/2017 को प्रारंभ होकर 25/10/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 24/12/2024 को प्रारंभ होकर 25/12/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

विदेश से उत्तम धनार्जन हो सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रसिद्ध होंगे और लोकप्रियता प्राप्त करेंगे। कान की व्याधि से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(25/12/2027 - 25/08/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/10/2017 को आरंभ हुई थी और 25/10/2037 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/12/2027 को प्रारंभ होकर 25/08/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 9,11 और लग्न भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विधि और तर्कशास्त्र के विद्वान हो सकते हैं, बुद्धिमान होंगे, तर्कशास्त्र के विद्वान हो सकते हैं, बुद्धिमान होंगे, किसी प्रशासक के सलाहकार हो सकते हैं या धर्मप्रचारक हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा, सम्मान में वृद्धि होगी। ईश्वर में आस्था होगी। संतान और मित्रों से सुख मिलेगा।